शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन

डॉ.लक्ष्मण शिंदे, उपाचार्य, उषा सरोज (शोधार्थी)
शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षण के क्षेत्र में दक्षता का बहुत महत्व है। इसके अभाव में शिक्षा उद्देश्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। उन्हें अपने संकाय से सम्बंधित शिक्षण कौशल में निरंतर दक्षता हासिल करना होती है। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास बहुत कुछ शिक्षण दक्षता पर निर्भर होता है। एक शिक्षक ने जो कुछ ज्ञान अर्जित किया है, उसे विभिन्न कौशलों के माध्यम से आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षण एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों को दक्ष शिक्षक बनकर कई चुनौतियों का सामना करना है ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। दक्ष शिक्षक अपने कार्य में दक्ष एवं उसके प्रति प्रतिबद्ध होता है। शिक्षक की दक्षता का प्रभाव उसके व्यवहार में परिलक्षित होता है। एक दक्ष शिक्षक को अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिये। उसे प्रस्तुत करने की विभिन्न विधियों का ज्ञान होना चाहिये। अपने ज्ञान को पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करते आना चाहिये। वह अपने एवं अपने कार्य के प्रति सकारात्मक विचार रखे।

गेज (1962) के अनुसार:- “शिक्षण वह प्रक्रिया है, जहां छात्र एवं शिक्षक के पारस्परिक प्रभावों को सम्मिलित किया जाता है, जिसमे व्यावहारिक क्षमताओं के विकास का लक्ष्य होता है।”

जायस एवं वेल (1985) के अनुसार शिक्षण का तात्पर्य वातावरण निर्माण से है, जहाँ बालक के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सकता है।

मारीसन (1934) के अनुसार, “शिक्षण बालक के व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया है।” इस प्रकार शिक्षण को विभिन्न शिक्षा दार्शनिकों ने भिन्न-भिन्न तरीके से परिभाषित किया है।

जोशी (2002) के अनुसार “दक्षता, किसी कार्य के लिए आवश्यक सभी व्यवहारों का प्रभावी संपादन है, जो उत्तम परिणाम प्रदान करता हैं।”

शिक्षक की शिक्षण-दक्षता को कई कारक प्रभावित करते हैं जैसे आत्मविश्वास, आत्मसंकल्पना, आवासीय पृष्ठभूमि, संकाय, लिंग, व्यक्तित्व, समायोजन, शिक्षण विधि, विषय वस्तु आदि। अर्थात् यह सभी चर शिक्षण-दक्षता को सकारात्मक व नकारात्मक रूप से किस प्रकार प्रभावित करते हैं, जानना आवश्यक हो जाता है। शिक्षक के समग्र जीवन में उसका आत्मविश्वास एवं आत्मसंकल्पना सदैव साथ चलती है।

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2014
पीअर रीव्यूड रिसर्च जर्नल

आत्मसंकल्पना उसे अपनी मान्यताओं, मूल्यों व अवधारणाओं को बनाने में सृजनात्मकता का विकास करने में सहायक होती है।

शिक्षण दक्षता

शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अधिगम-परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है ताकि शिक्षक-अंतर्क्रिया के माध्यम से छात्र के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाया जा सके। इसमें शिक्षक क्रियाशील रहता है अर्थात् शिक्षण शिक्षक योग्य व्यवहार हैं, जो अधिगम को अभिप्रेरित करता है। इसका लक्ष्य व्यावहारिक-दक्षता में वृद्धि करना होता है।

दक्षता आधारित शिक्षण

ऐसी शिक्षा जिसमें अधिगम उद्देश्यों का समावेश हो, जिन्हें इस प्रकार परिभाषित किया गया हो जिससे उनकी प्राप्ति का निरिक्षण किया जा सके एवं अधिगमकर्ता अपने व्यवहार द्वारा प्रदर्शित कर सकें। "राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रत्येक बालक गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करते हुए उन आधारभूत क्षमताओं का विकास करे जो कहीं न कहीं उसके जीवन में उपयोगी हो एवम विकास के लिए अनिवार्य हो।"
"शिक्षा जो छात्रों की विशिष्ट दक्षताओं की प्राप्ति पर केन्द्रित हो, दक्षता आधारित शिक्षण है।"

दक्ष शिक्षक की विशेषताएं

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवम् शिक्षा-दार्शनिकों ने दक्ष-शिक्षक की भिन्न-भिन्न विशेषताओं पर प्रकाश डाला है, जिसका सारांश इस प्रकार हैं-

- दक्ष-शिक्षक बालक के सीखने में पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाता है अर्थात् वह इस प्रकार मार्ग बताता है जिसका अनुकरण करके बालक स्वतः ही अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है।
- दक्ष-शिक्षक मर्मज्ञ, दया एवम् सहानुभूति से पूर्ण होता है।
- दक्ष शिक्षक में सहयोग की भावना होती है फलतः वह कक्षागत शिक्षण में रोचकता एवम् सजगता लाने के लिए उचित वातावरण का निर्माण कर पाता है।
- दक्ष-शिक्षक अपने शिक्षण को इस प्रकार प्रदर्षित करता है कि उसका स्वरूप आदेशात्मक नहीं रह जाता, बल्कि सुझावात्मक हो जाता है।
- दक्ष-शिक्षक एक प्रजातांत्रिक व्यक्ति होता है अर्थात् वह बिना किसी भेदभाव के अपनी प्रजा यानि विद्यार्थियों के लिए समान शिक्षा की व्यवस्था कराता है।
- दक्ष-शिक्षक के कार्य एवम् उनके करने के तरीके इतने उत्तम होते हैं, जिन्हें स्वयं में ढालने हेतु बालक स्वतः प्रेरित होता है।
- दक्ष-शिक्षक कक्षाकक्ष अवधि में प्रस्तुत की जाने वाली अनुदेशनात्मक सामग्री को पूर्व में ही सुव्यवस्थित एवम् सुनियोजित कर लेता है।
- दक्ष-शिक्षक अपने शिक्षण को व्यावहारिक एवम् प्रभावशाली बनाने हेतु स्वयं के तथा बालक के अनुभवों को समुचित रूप से शामिल करता है।
- दक्ष-शिक्षक बालक की योग्यताओं, रूचियों, अभिक्षमताओं, आदतों, व्यवहारों आदि को ध्यान में रखकर शिक्षण के लिए मार्ग तय करता है, फलतः वह प्रगतिशील होता है।
- दक्ष-शिक्षक अपने शिक्षण को उपचारपूर्ण बनाता है अर्थात् कक्षाकक्ष के दौरान उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का गहराई से अध्ययनकर, बालक के हित में उचित समाधान हेतु स्व-विचार

एवं स्वतः चिन्तन द्वारा उचित समाधान प्राप्त कर सकें।

- दक्ष-शिक्षक, ज्ञान को सत्य की कसौटी पर रखकर उसका मूल्यांकन करता है अर्थत् वह सतत् व्यापक मूल्यांकन के माध्यम ये बालकों की विकासात्मक प्रक्रिया में उचित मूल्यांकन-प्रविधियों का उपयोग करता है।

इस प्रकार शिक्षण में दक्षता लाने के लिए विभिन्न शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं को बहुआयामी प्रयास करने होंगे, ताकि शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों को पारंगत बनाया जा सके। ऐसा करने से जहां एक ओर उत्तम नागरिक तैयार करने वाले दक्ष शिक्षकों की संख्या में बढोत्तरी होगी, वहीं शिक्षा के स्तर को भी उन्नत बनाया जा सकेगा।

आत्मसंकल्पना

एक व्यक्ति जिस प्रकार अपना प्रत्यक्षीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने को देखता है उसे ही हम उस व्यक्ति का आत्मसंप्रत्यय कहते हैं।

उस वातावरण के भाव को जिसमे वह सम्मिलित रहता है प्रत्यय आत्म कहते हैं और शेष के वातावरण को जिसके संबंध में वह जानता है अथवा जिसके प्रति वह प्रतिक्रिया करता है, प्रत्यक्ष वातावरण कहलाता है।

स्वयं के सम्बन्ध में विचार करने को आत्म संप्रत्यय कहते हैं। यह मैं हूँ। प्रत्यक्ष आत्म में, आत्म संप्रत्यय और वातावरण में वह संप्रत्यय और वातावरण में वह पक्ष होता है, जिन्हें व्यक्ति अपने में आत्मसात करता है। मेरा परिवार, मेरा विद्यालय, मेरा घर इत्यादि। दोनों आत्म संप्रत्यय और प्रत्यक्ष, आत्म प्रत्यक्ष वातावरण में सम्मिलित होते हैं। इसको व्यक्ति का आत्म क्षेत्र भी कहते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक उसको मनोवैज्ञानिक क्षेत्र भी कहते हैं।

एक शिशु प्रारंभिक काल में संवेदन अस्पष्ट तथा अव्यवस्थित होता है। बालक जैसे-जैसे बड़ा होने लगता है, वह संप्रत्यय बनाता है। प्रत्यक्ष आत्मा बनाता है और प्रत्यक्ष वातावरण की अवधारणा ग्रहण करता है। वह क्या है, उसके विचार करने के तरिके, अपने प्रति दृष्टिकोण आदि आत्मसंकल्पना में रखता है। सामान्य रूप में व्यक्ति की अपनी मान्यताओं, मूल्यों से मिलकर उसकी आत्मसंकल्पना बनती है।

संकाय

संकाय से आशय स्नातक स्तर पर निर्धारित पाठ्यक्रम से है, जो प्रमुख रुप से निम्नानुसार हैः-

कलाः-कला शब्द का उद्भव ‘कल’ धातु से हुआ है, ‘कल’ से तात्पर्य सुन्दर एवं मधुर से है, जो आनन्द उत्पन्न करती है। कला ‘सत्यम् शिवम सुन्दरम’ की अभिव्यक्ति है। कला हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है और इसके अभाव में जीवन संभव नही है, कहा भी गया है कि कला ही जीवन है और जीवन ही कला है। कला एक सामाजिक वास्तविकता के रूप में समाज के विकास की अभिव्यक्ति है। “कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है। यह विचारों और संवेदनाओं और भावनाओं की अभिव्यक्ति करने का माध्यम हैं।”

विज्ञानः- विज्ञान शब्द का आशय है एक विशेष प्रकार का ज्ञान अथवा विशिष्ट ज्ञान। इस प्रकार विज्ञान शब्द का अर्थ उस ज्ञान से है, जो बुद्धि द्वारा ग्रहण किया जाए और शब्दों के माध्यम से दूसरे को प्रेषित किया जाए। आईस्टीन के अनुसारः- “हमारी ज्ञान अनुभूतियों की अस्त-

व्यस्त विभिन्नता की एक तर्कपूर्ण विचार प्रणाली निर्मित करने के प्रयास को विज्ञान कहते हैं।”

वाणिज्यः- इसके अंतर्गत सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बहीखाता, लेखाकर्म आदि का अध्ययन किया जाता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

फिन्नी (1975) के शोध का उद्देश्य था-(1) शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता और सुरक्षा-असुरक्षा लक्षण के मध्य संबंध प्राप्त करना। शोध के न्यादर्श के रूप में शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के 180 शिक्षक प्रशिक्षणार्थी लिए गये थे। प्रदत्तों का संकलन क्षेत्रीय शैक्षिक संस्थान, भोपाल द्वारा निर्मित शिक्षण दक्षता मापनी तथा Maslow की सुरक्षा-असुरक्षा अनुसूची का उपयोग किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण Product Correlation Technique के द्वारा किया गया। शोध के निष्कर्ष थे-(1) शिक्षण-दक्षता और सुरक्षा लक्षण को प्रभावित नहीं करती है, किन्तु यह शिक्षण के प्रति धनात्मक व्यवहार रखती है।

प्रकाश (1980) के शोध के उद्देश्य थे-(1)शिक्षण प्रभाविता पर शिक्षण-दक्षता के प्रभाव का अध्ययन करना। (2) शिक्षण-दक्षता पर विद्यालयीन संगठनात्मक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। शोध हेतु 800 शिक्षक एवं 92 प्राचार्य लिये गये जो रायपुर एवं बिलासपुर जिले के थे। प्रदत्तों के संकलन हेतु पासी ललिता की तथा मेहता कुमार की शिक्षण प्रभाविता मापनी का उपयोग किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण Mean, t-Test, Anova, Coefficient of correlation विधि से किया गया। शोध के निष्कर्ष थे-(1) शासकीय और गैरशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण -दक्षता और शिक्षण प्रभाविता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। (2) दो स्वतंत्र चरों में शिक्षण दक्षता का प्रभाव विद्यालयीन संगठनात्मक वातावरण पर सार्थक रूप से उच्च पाया गया।

शर्मा (1980) के शोध के उद्देश्य थे-(1)योगात्मक प्रतिमान के द्वारा पांच शिक्षण कौशलों के एकीकरण की प्रभाविता के तुलना ITCS एवं GTCS से करना। शोध की परिकल्पना थी नियोजित समूह और योगात्मक प्रतिमान द्वारा प्रशिक्षित कौशलों के एकीकरण का एवं समूहों के माध्य प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर नही है। शोध हेतु 20 छात्र, शिलांग के प्रशिक्षण कालेज से लिए गए। प्रदत्तों का संकलन ITCS एवं GTCS से किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण ITCS एवं GTCS से किया गया। शोध का परिणाम था-(1) प्रायोगिक समूह के प्राप्तांक और नियंत्रित समूह के मध्य सार्थक अंतर था।

राजमिनाक्षी (1988) के शोध का उद्देश्य था-(1) बी.एड. छात्रों की शिक्षण -दक्षता को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना। शोध हेतु 610 बी.एड. विद्यार्थी एवं 1500 स्कूली विद्यार्थी सम्मिलित किये गये, जो तमिलनाडु राज्य के थे। प्रदत्त संकलन हेतु स्व मूल्यांकन मापनी एवं छात्र मूल्यांकन मापनी का उपयोग किया गया। प्रदत्तों का विष्लेषण माध्य, t-Test, मानक विचलन, और सहसंबंध विधि से किया गया। शोध का निष्कर्ष था-(1) प्रदर्शन कौशल एवं सूक्ष्मशिक्षण में प्रशिक्षण देने से शिक्षण में सार्थक वृद्धि हुई।

परिजा (1996) ने शोध में छात्राध्यापकों की व्यक्तित्व विशेषताओं और उनका शिक्षण पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य था-(1) विभिन्न व्यक्तित्व कारकों वाले

छात्राध्यापकों की शिक्षण -दक्षता के प्राप्तांको की तुलना करना। शोध की परिकल्पना थी- विभिन्न व्यक्तित्व कारकों वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण -दक्षता के प्राप्तांको में कोई सार्थक अंतर नही है। शोध के लिए IOE, DAVV के 62 विद्यार्थियों को लिया गया। इनका चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया। प्रदत्तों का संकलन 16PF तथा GTCS के द्वारा किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण t-Test के द्वारा किया गया।

शोध के निष्कर्ष थे-(1) संवेगात्मक रूप से स्थिर छात्राध्यापकों और भावनाओं से प्रभावित होने वाले छात्राध्यापकों की शिक्षण -दक्षता माध्यों में कोई सार्थक अंतर नही था। (2) आरक्षित अध्यापकों के प्राप्तांक, बाहर के छात्राध्यापकों की शिक्षण -दक्षता के प्राप्तांको से सार्थक रूप से उच्च थे।

कुमार(2004) ने शोध में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व, शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण-दक्षता में सहसंबंध एवं तुलनात्मक अध्ययन (अनु.जाति, जनजाति के संदर्भ में) किया। शोध के उद्देश्य थे- (1) अनु.जाति, जनजाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के माध्यों की तुलना करना। (2) अनु.जाति एवं जनजाति के छात्राध्यापकों की शिक्षण-दक्षता के माध्यों की तुलना करना। (3) अनु.जाति के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं शिक्षण-दक्षता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना। (4) अनु.जनजाति के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं शिक्षण-दक्षता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना। शोध की परिकल्पनाएं थीं-- (1) अनु.जाति, जनजाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नही है। (2) अनु.जाति एवं जनजाति के छात्राध्यापकों की शिक्षण-दक्षता के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नही है। (3) अनु.जाति के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं शिक्षण-दक्षता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही है। (4) अनु.जनजाति के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं शिक्षण-दक्षता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नही है। शोध के लिए शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के 39 छात्राध्यपकों को लिया गया। प्रदत्तों का संकलन अहलूवालिया की अध्यापन अभिवृत्ति मापनी तथा GTCS के द्वारा किया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण t-Test और सहसंबंध गुणांक के द्वारा किया गया। शोध के निष्कर्ष थे-(1)) अनु.जाति, जनजाति के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व के माध्यों में कोई सार्थक अंतर नही है। (2) शिक्षण-दक्षता अनु.जनजाति के छात्राध्यापकों की अपेक्षा अनु.जाति के छात्राध्यापकों में सार्थक रूप से उच्च पाई गई।(3) अनु.जाति के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं शिक्षण-दक्षता में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। (4) अनु.जनजाति के छात्राध्यापकों के व्यक्तित्व एवं शिक्षण-दक्षता में निम्न धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

गणपति(1992) ने छात्राध्यापकों की आत्मसंकल्पना एवं शिक्षा अभिवृत्ति का अध्ययन शिक्षण व्यवसाय के परिप्रेक्ष्य में किया। शोध का उद्देश्य था-(1) छात्राध्यापकों की शिक्षण व्यवसाय एवं शिक्षण अभिवृत्ति के बीच सहसंबंध का अध्ययन किया। शोध का निष्कर्ष था-(1) छात्राध्यापकों की शिक्षक अभिवृत्ति के प्रति अभिवृत्ति पाई गई तथा शिक्षण अभिवृत्ति के धनात्मक आत्मसंकल्पना पाई गई।

मोहन(1975) ने अपने शोध कार्य में आत्मसंकल्पना के विकास का संबंध बुद्धिलब्धि, अधिगम, योग्यता, उपलब्धि एवं उपलब्धि

अभिप्रेरण आदि के साथ किया। शोध के उद्देश्य थे-(1) आत्मसंकल्पना के स्थायित्व का बुद्धिलब्धि, अधिगम, योग्यता, उपलब्धि एवं उपलब्धि अभिप्रेरण के सहसंबंध का अध्ययन करना। शोध के निष्कर्ष था-(1) महिला विद्यार्थियों की आत्मसंकल्पना स्थायित्व पुरूषों की तुलना में श्रेष्ठ पाई गई।

गोस्वामी (1978) ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों का अध्ययन किया तथा इसका संबंध स्कालेस्टिक एकेडमिक अचिवमेन्ट और समायोजन के सन्दर्भ में किया। शोध के उद्देश्य-(1) आत्मसंकल्पना और लिंग के मध्य संबंध ज्ञात करना। न्यादर्श के रूप में कक्षा 10 वीं आगरा के विद्यार्थियों को लिया गया। शोध के निष्कर्ष थे-(1) आत्मसंकल्पना और लिंग के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया।

शाह (1978) ने अपने शोध कार्य में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्मसंकल्पना का अध्ययन किया। शोध के उद्देश्य थे-(1) माध्यमिक स्तर की महिला विद्यार्थियों में पुरुष विद्यार्थियों की तुलना में उच्च सकारात्मक आत्मसंकल्पना होती है। इस शोध के लिए 718 (महिला-368,पुरूष-350) विद्यार्थियों को शामिल किया गया। शोध के निष्कर्ष थे-(1) महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों की आत्मसंकल्पना में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

शर्मा (1978) ने अपने शोध कार्य में कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों की आत्मसंकल्पना पर उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि और बुद्धिलब्धि के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध के उद्देश्य थे-(1) आत्मसंकल्पना पर शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धिलब्धि, सामाजिक-आर्थिक स्तर के संबंध का अध्ययन करना। शोध के लिए 1127 विद्यार्थियों (महिला-690,पुरूष-737) पर किया। शोध के निष्कर्ष थे-(1) आत्मसंकल्पना से शैक्षिक उपलब्धि, बुद्धिलब्धि का उच्च संबंध पाया गया, किन्तु निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का निम्न संबंध का पाया गया।

औचित्य

शिक्षण एक अति महत्वपूर्ण कार्य है, वर्तमान परिपे्रक्ष्य में शिक्षकों को दक्ष शिक्षक बनकर कई चुनौतियों का सामना करना है, ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। दक्ष शिक्षक अपने कार्य में दक्ष एवं उसके प्रति प्रतिबद्ध होता है। शिक्षक की दक्षता का प्रभाव उसके व्यवहार में परिलक्षित होता है, किन्तु शिक्षण को कई कारक प्रभावित करते हैं जैसे आत्मविश्वास, आत्मसंकल्पना, आवासीय पृष्ठभूमि, संकाय, लिंग आदि। अतः यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इन विभिन्न कारकों का शिक्षण में क्या संबंध है। इन्हीं विभिन्न चरों का आपसी संबंध ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता इस शोध हेतु प्रेरित होता है।

शिक्षक के समग्र जीवन में उसका आत्मविश्वास एवं आत्मसंकल्पना सदैव साथ चलती है। आत्मसंकल्पना उसे अपनी मान्यताओं, मूल्यों व अवधारणाओं को बनाने में सृजनात्मकता का विकास करने में सहायक होती है।

शोधकर्ता ने यह अनुभव किया कि इन चरों की विकासात्मक प्रवृत्ति का अध्ययन कर शिक्षक की शिक्षण दक्षता को बेहतर बनाने में सहयोग किया जा सकता है। बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पर यह शोध करना अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि भविष्य में इन्हीं के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ेगी।

उद्देश्य

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नही है।

परिसीमन

शोध कार्य में न्यादर्श के रूप में केवल देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर की शिक्षा अध्ययन शाला के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को ही लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में शिक्षा अध्ययन शाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के 60 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया, जिसमें 25 छात्र और 35 छात्राएं थीं।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण दक्षता एवं आत्मसंकल्पना से संबंधित चरों से संबंधित प्रदत्त एकत्रित किये गये।

इन प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रयुक्त किए गए उपकरणों का वर्णन नीचे दिया गया है-

1 शिक्षण दक्षता- डा. बी.के. पासी (1975) द्वारा निर्मित सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी।

2. आत्मसंकल्पना- डा. प्रतिभादेव (1964) द्वारा निर्मित आत्मसंकल्पना परीक्षण।

प्रदत्तों का संकलन

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वप्रथम शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के विभागाध्यक्ष से अनुमति प्राप्त कर, शोध हेतु अनुमति प्रदान करने का आग्रह किया। तत्पश्चात शोधार्थी द्वारा शोध के न्यादर्श से संपर्क स्थापित किया तथा उन्हें अपने शोध का उद्देश्य बताया। चयनित न्यादर्श से सोहार्द्रपूर्ण वातावरण में, प्रथम दिवस आत्मसंकल्पना इन्वेन्ट्री भरवायी गई। तत्पश्चात सामान्य शिक्षण दक्षता मापनी का परीक्षण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के कक्षा शिक्षण का अवलोकन करके किया गया। अंत में शोधार्थी द्वारा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तों का विश्लेषण निम्न सांख्यिकीय तकनीकी द्वारा किया गया-

प्रथम उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन द्वि-मार्गीय प्रसरण विधि (Two way Anova) द्वारा किया गया।

द्वितीय उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया के प्रभाव का अध्ययन द्वि-मार्गीय प्रसरण विधि (Two way Anova) द्वारा किया गया।

परिणाम एवं चर्चा

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना,

संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया का प्रभाव

शोध अध्ययन का प्रथम उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंतःक्रिया के

प्रभाव का अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण 2 ग्3 अभिकल्प प्रसरण विश्लेषण द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण का विवरण सारणी 4.1.0 में दर्शाया गया है।

सारणी 1.1.0 शिक्षण दक्षता के संदर्भ में 2x3 अभिकल्प प्रसरण विश्लेषण का सारांश

विचरण के स्त्रोत	df	SS	MSS	F
आत्म संकल्पना	1	24418.137	24418.137	119.660**
संकाय	2	215.975	107.987	0.529
आत्म संकल्पना संकाय	2	910.286	455.143	2.330
त्रुटी	54	11019.429	204.063	
कुल योग	60			

''0.01 स्तर पर सार्थक

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का प्रभाव

विवेचना

तालिका 1.1.0 से ज्ञात होता है कि शिक्षण दक्षता के लिए df = 1@54 पर F का मान 119.660 है, जिसका सार्थकता का जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त की जाती है। साथ ही निम्न आत्मसंकल्पना समूह के शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों का माध्य 106.944 है, जो कि उच्च आत्मसंकल्पना समूह के शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों के माध्य 63.849 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता निम्न और निम्न आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता से उच्च होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का सार्थक रूप से प्रभाव पाया गया। ऐसा शायद इसलिए कि निम्न संकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में अपने कार्य के प्रति अधिक जागरूकता है। वे स्वभाव से शांतचित्त होते हैं और अपने कार्य को पूर्ण गम्भीरता से करते हैं, जबकि उच्च आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में गंभीरता नहीं होती है। वे अधिक बातूनी होते हैं अतः अति आत्मविश्वास से ग्रस्त होते हैं। इसी कारण उच्च आत्मसंकल्पना होने पर भी उनकी शिक्षण दक्षता निम्न पाई गई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर संकाय का प्रभाव

सारणी 1.1.0 को देखने से ज्ञात होता है कि संकाय के लिए df = 2/54 पर F का मान 0.529 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर संकाय का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त नहीं की जाती है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि

संकाय का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं देखा गया।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं उनकी अंतक्रिया का प्रभाव

सारणी 4.1.0 को देखने से ज्ञात होता है कि आत्मसंकल्पना एवं संकाय की अंतर्क्रिया के लिए df = 2/54 पर F का मान 2.230 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं उनकी अंतःक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है'' निरस्त नहीं की जाती है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं उनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का प्रभाव

विवेचना

तालिका 1.2.0 से ज्ञात होता है कि शिक्षण दक्षता के लिए df = 1/56 पर F का मान 122.881 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है' निरस्त की जाती है। साथ ही निम्न आत्मसंकल्पना समूह के शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों का माध्य 107.918 है, जो कि उच्च आत्मसंकल्पना समूह के शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों के माध्य 65.322 से सार्थक रूप से उच्च है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उच्च आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता निम्न और निम्न आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता से उच्च होती है। अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का सार्थक रूप से प्रभाव पाया गया। ऐसा शायद इसलिए कि निम्न संकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में अपने कार्य के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं, वे स्वभाव से षांतचित्त होते हैं और अपने कार्य को पूर्ण गम्भीरता से करते हैं, जबकि उच्च आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में गंभीरता नही होती है वे अधिक बातूनी होते हैं। अतः अतिआत्मविश्वास से ग्रस्त होते हैं। इसी कारण उच्च आत्मसंकल्पना होने पर भी उनकी शिक्षण दक्षता निम्न पाई गई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार हैं -

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर उनकी आत्मसंकल्पना का सार्थक प्रभाव है। उच्च आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता निम्न और निम्न आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता उच्च पाई गई। ऐसा शायद इसलिए कि निम्न संकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में अपने कार्य के प्रति अधिक जागरूक रहते हैं, वे स्वभाव से शांतचित्त होते हैं और अपने कार्य को पूर्ण गम्भीरता से करते हैं, जबकि उच्च आत्मसंकल्पना वाले शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में

गंभीरता नही होती है। वे अधिक बातूनी होते हैं। अतः अति आत्मविश्वास से ग्रस्त होते हैं। इसी कारण उच्च आत्मसंकल्पना होने पर भी उनकी शिक्षण दक्षता निम्न पाई गई। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर उनके संकाय का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना एवं भविष्यपरक संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था में परिमार्जन करना है। देश के दर्शन और वैश्विक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षाशास्त्रियों को एक व्यापक शिक्षा प्रणाली का निर्माण करना होता है और उसके समुचित क्रियान्वयन के लिए एक कारगर योजना भी बनानी पड़ती है। एक विकसित एवं सभ्य समाज की दिशा में विद्यार्थियों के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण का निर्माण शिक्षा के माध्यम से शिक्षाशास्त्रियों को ही करना होता है। ऐसी स्थिति में विद्यालयों के विभिन्न स्तरों में सामंजस्य स्थापित करना शिक्षा प्रणाली का एक आवश्यक कार्य हो जाता है। इसी प्रकार योग्य एवं दक्ष शिक्षकों का चयन करना भी होता है, जो उचित शिक्षण कर सकें। विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति एवं मनोसामाजिक वातावरण के निर्माण और आत्मसंकल्पना निर्माण और व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में उसके सामाजिक विकास में विशेष भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार शिक्षाशास्त्री योग्य एवं दक्ष शिक्षकों के चयन एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को श्रेष्ठ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शिक्षा प्रणाली के सही क्रियान्वयन की दिशा में प्राचार्यों एवं प्रशासकों का विशेष योगदान होता है। प्रशासक ऐसे वातावरण का निर्माण करें ताकि शिक्षण के साथ ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सके, जो उसमें आत्मसंकल्पना के निर्माण में सहायक हों।

शिक्षक एवं विद्यार्थियों के बीच घनिष्ठ संबंध होते हैं, क्योंकि शिक्षक विद्यार्थियों के ज्यादा संपर्क में रहता है। एक दक्ष शिक्षक का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। यह कार्य वह पाठ्यक्रम एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं की सहायता से पूर्ण करवाता है। शिक्षक का कार्य समाज को एक सारगर्भित वातावरण देना है, क्योंकि शिक्षक समाज के साथ सक्रिय रूप से ज्यादा जुड़ा रहता है। अतः शिक्षक को चाहिये कि वह अपने विषय में दक्ष हो एवं उसे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत कर सके। शिक्षक को एक दक्ष शिक्षक बनने के लिए अपने विषय में पारंगत होने के साथ-साथ उसे पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करना भी आना चाहिये, प्रभावी शिक्षण के लिए यह अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 सिंघ, एच.एस, वर्तमान समाज एवं शिक्षक शिक्षा, प्रथम संस्करण, राखी प्रकाशन, आगरा, 2013

2 ओसवाल, जी, प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, प्रथम संस्करण, हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2006

3 भटनागर, सुरेश: शिक्षा मनोविज्ञान, आर लायल बुक डिपो, मेरठ, 1992

4 पाल, एच.आर, उच्च शिक्षा में अध्यापन व प्रशिक्षण की प्रविधियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2000

5 माथुर, एस.एस., शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2007

6 पाटिल, पी.के., कला संकाय, विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों का जोखिम स्वीकार, आत्मविश्वास एवं तर्क योग्यता के आधार पर अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2001

7 पटनायक, हिमांशु बी.एड. के पुरुष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास एवं सामाजिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघुशोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 1998

8 शर्मा, उषा: कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर ध्यान के प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघुशोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2009

9 वर्मा, बबिता: सूक्ष्म शिक्षण की प्रभाविता का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता, आत्मविश्वास एवं सूक्ष्म शिक्षण के प्रति प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन, अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2012

10 गुप्ता, एस.के., शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व का उपलब्धि एवं शिक्षण दक्षता के संदर्भ में अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2004

11 मण्डलोई, पी.के., शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का चयनित चरों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2004

12 छावनीवाल, मोहनी: बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संकाय, व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2012

13 भाभर, विक्रम: इन्दौर शहर के कक्षा 9 वीं स्तर के विद्यालयीन समायोजन एवं आत्मसंकल्पना के मध्य सम्बन्धः एक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2010

14 विद्यार्थी, सीमा: मध्यप्रदेश पुलिस प्रशासन में कार्यरत कर्मचारियों एवं अन्य उपक्रम में कार्यरत कर्मचारियों के बालकों में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं जोखिम क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2006

15 पाल, एच.आर.: प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यन्वयन निदेशालय, 2006

16 उपाध्याय, रंजना, शासकीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों का आकांक्षास्तर और आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड. लघु शोध प्रबंध, शिक्षा अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर, 2013

17 शास्त्री, के.एन.: अध्यापक शिक्षा, प्रेरणा प्रकाशन, दिल्ली, 2008